Self Respect

29-07-2014

- ✓तुम भी जानते हो कल हम कितने दु :खी थे, अपार दुःखों के बीच थे । अभी फिर अपार सुखों के बीच में जा रहे हैं ।

- ✓हम ब्राह्मण ही यह ज्ञान सुनाते हैं श्रीमत पर । तुम समझाते हो इस हिसाब से हम ब्राह्मण ही प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान ठहरे । अनेक बार बने थे, फिर होंगे । मनुष्यों की समझ में जब आयेगा तब मानेंगे । तुम जानते हो कल्प-कल्प हम प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान एडोपटेड बच्चे बनते हैं । जो समझते हैं वह निक्षयबुद्धि भी हो जाते हैं । ब्राह्मण बनने बिगर देवता कैसे बनेंगे ।

- इस बाप की पढ़ाई से ही सूर्यवशी-चन्द्रवशी घराना बनने का है । वह इस जन्म में ही पढ़कर और मर्तबा पा लेते हैं । तुम तो जानते हो इस पढ़ाई का पद फिर नई दुनिया में मिलना है । वह कोई दूर नहीं है । जैसे कपड़ा बदला जाता है ऐसे ही पुरानी दुनिया को छोड़ जाना है नई दुनिया में ।

- यह स्कूल भी मोस्ट अनकॉमन है । भगवान् आकर पढ़ाते हैं ।

- वरदान: नॉलेज की लाइट माइट से रांग को राइट में परिवर्तन करने वाले ज्ञानी तू आत्मा भव !

- मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग । रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।